Name- Amil Kumar
Dept. of Pol. Science
Adarsh College Rajdhanwar

(Sem - II) Paper- Core-4 (भारतीय राजनीतिक चिंतक)

* Lession - 01 (Kautilya - Saptang and Mandal theory)
* Objective Qus.

Sub- Pol Science

(1) कौटिल्य ने किस सम्राट के साथ मिलकर मौर्य वंश की स्थापना की :-
(i) चन्द्रगुप्त (ii) अशोक (iii) बिन्दुसार

(2) कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में कुल कितने अधिकरण हैं :-
(i) 12 (ii) 18 (iii) 15

(3) कौटिल्य के द्वारा राज्य के सात अंगो में किस अंग का सर्वप्रथम स्थान है :-
(i) स्वामी (ii) दुर्ग (iii) अमात्य

(4) कौटिल्य के अनुसार मन्त्रियों की संख्या होनी चाहिए :-
(i) 7 या 8 (ii) 10 या 12 (iii) 3 या 4

(5) कौटिल्य ने राज्य के कितने अंग बताए हैं :-
(i) 5 (ii) 7 (iii) 9

(6) कौटिल्य ने मंत्रियों की निम्न श्रेणियां निर्धारित की हैं -
(i) उत्तम, मध्यम, शूद्र (ii) मध्यम, शूद्र, उत्तम
(iii) अमात्य, सचिव, परामर्शदाता

(7) कौटिल्य के अनुसार 'दण्ड' का अर्थ है :-
(i) राजा (ii) जनसंख्या (iii) सेना

(8) 'अर्थशास्त्र' पुस्तक के रचयिता कौन हैं -
(i) कौटिल्य (ii) चन्द्रगुप्त (iii) अशोक

Amil Kumar

Scanned by CamScanner

(9) 'अर्थशास्त्र' किस शास्त्र के प्रभाव से मुक्त है -?
(i) राजनीतिशास्त्र (ii) धर्मशास्त्र (iii) दोनों से

(10) अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में ~~चाणक्य~~ कौटिल्य की सबसे बड़ी देन कौन सी है -
(i) मण्डल सिद्धान्त (ii) वैदेशिक नीति (iii) A और B दोनों

Ans - (1) (i) (2) (i) (3) (i) (4) (iii) (5) (ii) (6) (i)
(7) (iii) (8) (i) (9) (ii) (10) (iii)

Anil Kumar
Adarsh College Rajdhanwar
Giridih

Scanned by CamScanner

Q. कौटिल्य द्वारा दिए गए मण्डल सिद्धान्त का वर्णन कीजिए ?

Ans- व्यावहारिक राजनीतिक चिन्तन की दृष्टि से ही नहीं, सैद्धान्तिक राजनीतिक चिन्तन की दृष्टि से भी कौटिल्य के राजनीतिक चिन्तन का अत्यधिक महत्व है। कौटिल्य द्वारा रचित पुस्तक 'अर्थशास्त्र' के प्रकाश में आने के पूर्व सामान्यतः यह समझा जाता था कि राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में भारत अत्यंत पिछड़ा है। अर्नेस्ट बर्कर का यह आरोप ~~भी~~ सही नहीं है कि भारत का प्राचीन काल राजनीतिक चिन्तन की दृष्टि से मरुभूमि है और प्राचीन भारत ने विश्व को केवल अध्यात्म दर्शन दिया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र की खोज ने यह सिद्ध कर दिया कि प्राचीन भारत केवल अर्थशास्त्र में ही नहीं अपितु समाज दर्शन मे भी किसी प्रकार से ~~पिछे~~ पीछे नहीं था।

※ सालेटोर (Saletore) के अनुसार :- "प्राचीन भारत की विचारधाराओं में सबसे अधिक स्थान देने योग्य कौटिल्य की विचारधारा है।"

※ यू० एन० घोषाल के शब्दों में :- "भारतीय उन लोगों की श्रेणी में हैं ~~जिन्होंने~~ जिन्होंने इतिहास के पृष्ठों पर अपनी छाप राजनीतिक विचार के मौलिक ढाँचे की नींव डालने वालों के रूप में छोड़ी है।"

※ कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त :-

कौटिल्य ने अपने मण्डल सिद्धान्त में अनेक राज्यों

Scanned by CamScanner

के समूह या मण्डल में विद्यमान राज्यों द्वारा एक-दूसरे के प्रति व्यवहार में लायी जाने वाली नीति का वर्णन किया है। इस सिद्धान्त में मण्डल केन्द्र ऐसा राजा होता है जो पड़ोसी राज्यों को जीतकर अपने में मिलाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। कौटिल्य ने ऐसे राजा को 'विजिगीषु' राजा (विजय की इच्छा रखने वाला राजा) कहा है। उसकी मान्यता है कि एक राजा का पड़ोसी राज्य स्वाभाविक रूप से उसका शत्रु होता है। और विजिगीषु के राज्य से अलग परन्तु उसके शत्रु राज्य की सीमा से मिला हुआ राज्य विजिगीषु का मित्र होगा। और मित्र राज्य से मिला हुआ राज्य अरि मित्र होगा। कहने का आशय यह है कि अपने निकटतम पड़ोसी राज्य का राजा शत्रु उसके आगे का मित्र और उसके आगे का अरि मित्र, इसी प्रकार से यह क्रम आगे चलता रहता है।

ये पाँच राज्य तो विजिगीषु के सामने वाली या उसके आगे की दिशा में होते हैं। इसी प्रकार कुछ राज्य उसके पीछे की दिशा में होते हैं।

इसे समझने के लिए एक चित्र की सहायता ली जा सकती है जो इस प्रकार है —

				मध्यम				उदासीन	
आक्रन्दासार (आक्रन्द का मित्र)	पार्ष्णिग्राहासार (पीछे के पीछे का मित्र)	आक्रन्द (पीछे का मित्र)	पार्ष्णिग्राह (पीछे का शत्रु)	विजिगीषु	अरि	मित्र	अरि मित्र	शत्रु	अरि मित्र-मित्र

※ इस सिद्धान्त में 12 राज्यों का समूह राज्य मण्डल कहलाता है।

उपर्युक्त चित्र को एक उदाहरण से समझ सकते हैं -

वर्तमान समय में भारत की सीमाएँ पाकिस्तान और चीन से लगी है और बहुत कुछ सीमा तक इसी कारण इन राज्यों के साथ भारत के मतभेद बने हुए है। तथा भारत के प्रति मतभेदों के कारण पाक और चीन परस्पर मित्र हैं। इसी प्रकार भारत, पाक और अफगानिस्तान तीनों देशों के पारस्परिक सम्बन्धों को मण्डल सिद्धान्त के आधार पर समझा जा सकता है।

Anil Kumar

Adarsh College Rajdhanwar

Scanned by CamScanner